जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

हंस

मूल्य ₹ 60

जुलाई 2024

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
माने मकर्तच्यान(अवैतनिक)
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
सोशल मीडिया
शैलेश गुप्ता
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
•
रेखाचित्र
रोहित प्रसाद, आस्था, राजेंद्र गायकवाड,अनुभूति

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट :www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 60 रुपए प्रति
वार्षिक : 700 रुपए (व्यक्तिगत)
रजिस्टर्ड : 1100 रुपए
संस्था/पुस्तकालय : 900 रुपए (संस्थागत)
रजिस्टर्ड : 1300 रुपए
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

जुलाई, 2024

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-453 वर्ष : 38 अंक : 12 जुलाई 2024

आवरण : वंदना पवार

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

इस अंक में

संपादकीय
4. फिर बैतलवा डाल पर : संजय सहाय

अपना मोर्चा
7. पत्र

न हन्यते
12. नहीं रहीं मिथक तोड़ने वाली एलिस मुनरो : विजय शर्मा
16. देवेश ठाकुर : जिनके लिए हर मंजिल एक पड़ाव भर थी : सतीश पांडेय

मुड़-मुड़ के देख
19. मानुस तन : ऋता शुक्ल (हंस, नवंबर 1986)

कहानियां
26. खूब अच्छा हूं ! : गोविन्द मिश्र
30. गंध : सुधांशु गुप्त
34. डर : रजत रानी 'मीनू'
40. ट्रेन की पटरियां : प्रकृति करगेती
46. वह सुबह कभी तो आएगी : ख़्वाजा अहमद अब्बास (उर्दू कहानी) (अनुवाद : मोहम्मद नौशाद)

कविताएं
44. निशान्त, कविता कृष्णपल्लवी
45. प्रतिभा चौहान, चंद्रेश्वर, सतीश कुमार शर्मा

ग़ज़ल
24. रहमान मुसव्विर 65. अविनाश भारती
68. नीरज सिंह 87. राम अवध विश्वकर्मा
92. जगदीश पंत 'कुमुद' 97. संजीव प्रभाकर

लघुकथा
65. अशोक भाटिया 87. सविता पांडेय

लेख
50. चित्रांगदा और ऋतुपर्ण घोष : रमण सिन्हा
56. फेमिनिस्ट यूटोपिया और फैंटेसी : थेरी गाथाओं से 'सुल्ताना का सपना' तक : सुजाता

परख
63. भूमंडलीकृत दौर से उपजी कहानियां : चंचल चौहान
66. क्या बेमतलब है औरत होने का मतलब : राजकुमार सिंह
69. आवेष्टित सौंदर्य का विरल रूपबंध : प्रताप दीक्षित
75. अब ये अक्सर पत्नी-हत्या नहीं होनी चाहिए : नीलम कुलश्रेष्ठ
77. मातृत्व के गोलार्द्ध में एक पते की कई चिट्ठियां : सुप्रिया पाठक
81. भूमंडलोत्तर समय से संवाद करते कथाकारों का मूल्यांकन : अमिष वर्मा
84. क़ैद स्त्रियों की मुक्ति की राह : अनुरंजनी
88. बहुजन समाज के ढोंग पर सार्थक चिंतन : रोहित कौशिक

शब्दवेधी/शब्दभेदी
90. निमंत्रण : तसलीमा नसरीन

साहित्यनामा
93. साहित्यनामा : साधना अग्रवाल

रेतघड़ी
98

फिर बैतलवा डाल पर

चार अंकों के अंतराल के बाद फिर आपके बीच हूं. इन चार अंकों के संपादकों ने बेहतरीन अंक निकाले. साहित्य संसार के नए स्वाद चखाए. अनेक मूल प्रश्न उठाए. कुल मिलाकर 'हंस' का यह प्रयोग बेहद सफल रहा. पंकज सुबीर, कैलाश वानखेड़े, अनिल यादव और योगिता यादव के प्रति आभार व्यक्त करते हुए इन विक्रमों के कंधों से उतर वापस अपनी डाल पर आ लटका हूं. यूं इस वापसी की तुलना उन फटे-पुराने जूतों से भी की जा सकती है जो छुटकारा पाने के लाख प्रयासों के बावजूद फिर-फिरकर अबू मियां के पास पहुंच ही जाते थे. अगली बार पुख्ता इंतजाम करके जाऊंगा.

•

2024 के चुनावी नतीजों में भले ही सरकार एनडीए गठबंधन की बन गई हो, किंतु यह साफ हो जाता है कि हमारे संविधान और उस पर मंडराते खतरों के प्रति एक नई चेतना की शुरुआत हो चुकी है. इस सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रंथ में भरोसा रखने वाले छोटे-बड़े अनेक अरस्तू संविधान की आत्मा को जनसाधारण तक पहुंचाने में जुट गए हैं. इस देश का दुर्भाग्य रहा है कि जिस मुहिम को 26 जनवरी 1950 से ही छेड़ दिया जाना चाहिए था कि संविधान हमारे मानस में रच बस जाए और अपने मूल ढांचे के भीतर उसका निरंतर मानवीकरण चलता रहे, उसे हमारी 'ग्रैंड ओल्ड पार्टी' ने न जाने किन कारणों से छद्म विज्ञान पर टिकी आयुर्वेद या यूनानी उपचार पद्धतियों और उनके नुस्खों की मानिंद रहस्यमय बना छोड़ा था. संभवतः अवसरों का सुविधाजनक दोहन करने की नीयत से. इस तात्कालिक लाभ, लोभ और अदूरदर्शिता का दुष्परिणाम है कि लोकतंत्र के रास्ते सत्ता पर काबिज होने वाले लोग चार सौ पार की धौंस दिखा, न बदले जा सकने वाले बेसिक स्ट्रक्चर डॉक्ट्राइन सहित पूरे के पूरे संविधान को ही केसरिया कुंड में डुबोने की तैयारी कर चुके थे.

शुक्र है कि समय रहते लोगों में थोड़ी बुद्धि लौट आई और 'चार सौ के पार' महज जुमला बनकर रह गया. खैर, न नौ मन तेल का जुगाड़ हुआ, ना बड़े तांडव की शुरुआत

ही हो पाई. राधे-राधे!! लेकिन पिट जाने के बाद भी खुद को अजेय दिखाने के लिए थोड़ा-बहुत नग्न नृत्य परम आवश्यक हो जाता है. ऐसी मैकियावेल्लियन तरकीबें इसलिए कि लोग कभी सांड रहे को बधिया कराया बैल न समझ बैठें! पहले शिकार को तलाश लिया गया है जो बिना चाशनी लपेटे कुछ भी कह देने के लिए कुख्यात हैं. पक्ष तो पक्ष, विपक्ष के लिए भी वे अवांछित हैं. दिल्ली के कोतवाल ने उनकी गिरफ्तारी पर मुहर लगा दी है. सूची में और भी नाम जोड़े जा रहे हैं. देखें, अगला नंबर किसका आता है.

•

तमाम दावों और झंडीबाजी के बावजूद रेल हादसे हो रहे हैं. लोग मर रहे हैं. पैसा अफरात है–इतना कि खर्च नहीं हो पा रहा, फिर भी भारतीय रेल की हालत खस्ता है, क्योंकि इरादे भी तो नेक और ठोस होने चाहिए! वन्दे भारत एक्सप्रेस के जनक सुधांशु मणि भारत के सत्तर हजार किलोमीटर लंबे रूट ट्रैक पर चींटी चाल से लागू होती कवचीकरण प्रणाली पर चिंता व्यक्त कर रहे थे. पब्लिक इंडिया यूट्यूब चैनल के आनंद सिंह से बातचीत के दौरान उन्होंने साफ कहा कि पटरियों को दुरुस्त करने और उनके रख-रखाव में बेशक चमकदार सेल्फियों के अवसर नहीं बन पाएंगे, लेकिन यह काम सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ होना चाहिए. कि शोशेबाजियों को किनारे करने का वक्त आ गया है, कि बहुत हो चुका 'वन्दे भारत'! यह ईमानदार स्वीकारोक्ति बहुत कुछ कह जाती है.

•

यूनाइटेड नेशन्स के रेजोल्यूशन के बावजूद इज़राइल और उसके प्रधान नेतन्याहू ग़ज़ा पट्टी को नेस्तनाबूद करने पर तुले हुए हैं. हालांकि उनकी सेना के एक प्रवक्ता ने अपनी सीमा स्वीकार की है कि हमास को खत्म करना नामुमकिन है. संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार कार्यालय की इस रिपोर्ट के बाद कि इज़राइल ने संभवतः सोच-समझकर व्यवस्थित तरीके से युद्ध के मानक नियमों का खुला उल्लंघन किया है और आम नागरिकों के जान-माल सहित स्कूल, अस्पताल और राहत शिविर जैसे स्थलों को सुरक्षा प्रदान करने के बजाय उन्हें लगातार तबाह किया है, इज़राइल पर युद्ध विराम के लिए अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ता जा रहा है.

उधर आईसीसी के मुख्य प्रॉसिक्यूटर करीम ख़ान ने इज़राइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और हमास के लीडरान पर युद्ध अपराधों के जुर्म में गिरफ्तारी का वारंट जारी करने की अपील की है. इस कार्रवाई पर इज़राइल और हमास सहित नेतन्याहू के दत्तक-पिता अमेरिका की खिसियाहट देखते ही बनती है. जो बाईडन और उनके सेक्रेट्री ऑफ स्टेट सह विदेशी मामलों के सलाहकार एंटनी ब्लिंकन ने इसे हदों को लांघने वाला कृत्य बता दिया है.

युद्ध के विरोध में दुनिया एकजुट हो रही है. इज़राइल तक में इस युद्ध पर विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं. लेकिन मोटी चमड़ी और विशाल अहंकार वाले बेंजामिन नेतन्याहू फिलहाल कुछ सुनने को तैयार नहीं. अलबत्ता उन्होंने अपने हमलों को ग़ज़ा पट्टी के दक्षिणी इलाके राफ़ाह में केंद्रित कर दिया है जिसे विस्थापित फ़िलिस्तीनियों की शरणस्थली के तौर पर निर्धारित किया गया था. बड़े पैमाने पर शिशुओं, स्त्रियों और बुजुर्गों का वध हो रहा है, अब तक वहां सैंतीस हजार लोग इज़राइली सेना की क्रूरता का शिकार बन चुके हैं और आखेट अभी भी जारी है.

उधर कट्टर राष्ट्रवादी यहूदी धनपशुओं के चंदे पर पलते अनेक अमेरिकी विश्वविद्यालयों ने ग़ज़ा पट्टी के मुद्दे पर उभरते विद्यार्थियों के विरोध को दबाने में सारी मर्यादाएं तोड़ डालीं. कुछ परिसरों में तो ऐसा लगा मानो हम अमेरिका नहीं, जेएनयू या जामिया का मंजर देख रहे हों. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की बात करने वाले अमेरिका का यह दोमुंहा आचरण बेहद शर्मनाक रहा. इसकी जितनी भी भर्त्सना की जाए, वह कम है. बहरहाल, अपनी ही सरकार में बढ़ते अंतर्विरोधों के बीच बाइडन के स्वर भी बदलने लगे हैं. यह सारी अराजकता और खूनी खेल पहले ही रोका जा सकता था अगर अमेरिका ने इज़राइल को मनमानी करने की छूट न दे रखी होती.

•

यूक्रेन पर पुतिन द्वारा थोपे गए तीन साल से चलते विध्वंसक युद्ध ने विश्व को दो खेमों में बांट दिया है. दोनों पक्षों का चेहरा स्पष्ट होता जा रहा है. 15-16 जून को यूक्रेन में शांति बहाली के लिए उच्च स्तरीय वैश्विक सम्मेलन